

Manuscript

पौलुस और कुलुस्सियों

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 2

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80707585)

[पृष्ठभूमि 1](#_Toc80707586)

[संबंध 2](#_Toc80707587)

[कलीसिया 2](#_Toc80707588)

[विशेष लोग 3](#_Toc80707589)

[कुलुस्से में समस्याएं 4](#_Toc80707590)

[यूनानी दर्शनशास्त्र 4](#_Toc80707591)

[यहूदी व्यवस्था 6](#_Toc80707592)

[आकाशीय आत्मिक प्राणी 7](#_Toc80707593)

[संरचना और विषय-वस्तु 10](#_Toc80707594)

[अभिवादन 10](#_Toc80707595)

[उत्साह 10](#_Toc80707596)

[अंतिम अभिनंदन 10](#_Toc80707597)

[मसीहियत की सर्वोच्चता 11](#_Toc80707598)

[मसीह की सर्वोच्चता 11](#_Toc80707599)

[मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता 14](#_Toc80707600)

[मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता 16](#_Toc80707601)

[मसीही जीवन की सर्वोच्चता 18](#_Toc80707602)

[आधुनिक प्रयोग 20](#_Toc80707603)

[मसीह के प्रति वफादारी 20](#_Toc80707604)

[आत्मिक केन्द्र 22](#_Toc80707605)

[उपसंहार 25](#_Toc80707606)

परिचय

अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन के द्वारा लिखी गई एक बहुत ही प्रसिद्ध कहानी है जिसका नाम है, “द प्रिंस एंड द पाँपर” (हिन्दी में राजा और रंक)। इस कहानी में एक राजकुमार एक गरीब भिखारी को अपने महल में खेलने के लिए बुलाता है, दोनों अपने कपड़े बदलते हैं। जैसे कहानी आगे बढती है, भिखारी को राजकुमार समझ लिया जाता है और उसे महल के भीतर रखा जाता है और वह राजकुमार का जीवन जीने लगता है।

001

परन्तु दुखद रूप से राजकुमार को भिखारी समझ लिया जाता है और उसे महल से बाहर फेंक दिया जाता है। अब यदि राजकुमार को पहले से मालूम होता कि उसे महल से बाहर फेंक दिया जाएगा, तो मुझे यकीन है कि वह उस भिखारी के साथ अपने कपड़े बदलने को कभी सहमत नहीं होता। ऐसे साधारण खेल की तुलना इतने बड़े नुकसान से कभी नहीं की जा सकती।

002

कुछ रूपों में कुलुस्से की स्थिति पहली सदी में “द प्रिंस एंड द पाँपर” की कहानी के समान थी। कुलुस्से के मसीहियों को इस परीक्षा में डाला जा रहा था कि वे मसीह में पाए जाने वाले सौभाग्यों को आराधना के गैरमसीही तरीकों से बदल लें। अत: पौलुस ने कुलुस्सियों के लोगों को मसीह में अपार समृद्धि और राजकीय सौभाग्य का आनन्द उठाने का स्मरण दिलाने और मूर्तिपूजा से मिलने वाले झूठे लाभों से इन आशीषों को बदल लेने के परिणामों की चेतावनी देने के लिए पत्र लिखा।

003

यह हमारी श्रृंखला ”पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियां” का दूसरा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है “पौलुस और कुलुस्सियों”। इस अध्याय में हम पौलुस द्वारा पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाली कुलुस्सियों को लिखी पत्री का अध्ययन करेंगे। जैसा कि हम देखेंगे, इस पत्री में पौलुस ने उस झूठी शिक्षा के विरुद्ध कड़ाई से प्रत्युत्तर दिया जिसने मसीही आराधना में निम्नतर आत्मिक प्राणियों की आराधना को आरंभ कर दिया था।

004

पौलुस और कुलुस्सियों का हमारा अध्ययन तीन भागों में बंटा होगा। पहला, हम पौलुस द्वारा कुलुस्सियों को लिखी पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। दूसरा, हम कुलुस्सियों को लिखी उसकी पत्री की संरचना एवं विषय-वस्तु का आकलन करेंगे। और तीसरा, हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले हम कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की ओर मुड़ें।

005

पृष्ठभूमि

पौलुस यीशु मसीह का एक प्रेरित था, एवं पत्र लिखना मसीह के प्रतिनिधि के रूप में उसकी आधिकारिक सेवकाई का एक पहलू था। प्रेरित होने का दूसरा पहलू कलीसियाओं और लोगों की पासवानी करना था। और इसलिए पौलुस के पत्र आधिकारिक शिक्षण के संकलन मात्र ही नहीं थे। बल्कि, वे व्यक्तिगत और पासवानीय थे, और कलीसियाओं एवं लोगों जिनको उसने वे पत्र लिखे थे, उनके प्रति प्रेम और चिंता से प्रेरित थे। और पौलुस के पत्र “विषय पर आधारित” थे। अर्थात्, विशेष समयों और स्थानों में विशेष विषयों को संबोधित करने के लिए उन्हें लिखा गया था।

006

अत:, जब हम कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री का अध्ययन करते हैं, तो हमें उस अवसर या कारण के बारे में जानना महत्वपूर्ण है जिसने पौलुस को लिखने के लिए प्रेरित किया। हमें इस प्रकार के प्रश्न पूछने हैं- कुलुस्सियों ने कौनसी समस्याओं का सामना किया? उनको लिखने के लिए पौलुस को किस बात ने प्रेरित किया?

007

हम दो दिशाओं से कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। पहले, हम सामान्य रूप में कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ और कलीसिया के कुछ लोगों के साथ उसके संबंध के कुछ विवरणों का उल्लेख करेंगे। और फिर, हम कुलुस्से की कुछ समस्याओं की जांच करेंगे जिनको पौलुस संबोधित करता है। आइए, कुलुस्सियों के साथ पौलुस के संबंध को देखने के साथ आरंभ करें।

008

संबंध

पौलुस का कुलुस्से के प्रत्येक मसीही के साथ एक जैसा संबंध नहीं था, अत: हम पहले सामान्य रूप से कलीसिया के साथ उसके संबंध पर ध्यान देंगे, और फिर विशेष लोगों के साथ उसके संबंध पर। आइए, पहले हम कुलुस्से की कलीसिया के साथ उसके संबंध की ओर मुड़ें।

009

कलीसिया

कुलुस्से नगर फ्रूगिया नामक क्षेत्र में एशिया के रोमी प्रान्त में स्थित था। यह लिकुस घाटी में आता था जो और अधिक विशाल और लोकप्रिय नगर लौदिकिया की पूर्व दिशा में थी। तुलनात्मक रूप से कुलुस्से छोटा था। और उस समय के राजनीतिक एवं आर्थिक स्तरों के आधार पर यह निश्चित: पौलुस की पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पत्रियों में से सबसे कम महत्वपूर्ण था। पौलुस ने वास्तव में कभी इस कलीसिया से भेंट नहीं की थी, परन्तु फिर भी उसे उनकी बहुत परवाह थी। कुलुस्सियों 2:1 में उसके शब्दों को सुनें :

010

मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ। (कुलुस्सियों 2:1)

011

अब पौलुस दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के दौरान फ्रूगिया से होकर निकला था, परन्तु किन्हीं कारणों से उसने कुलुस्सियों की कलीसिया से भेंट नहीं की थी। संभवतया, वहां कलीसिया की स्थापना से पहले वह कुलुस्से गया होगा। या शायद वह उस नगर में तो गया हो परन्तु उसे कलीसिया से मिलने का अवसर न मिला हो। यह भी संभव है कि वह कभी कुलुस्से के नगर में गया ही न हो। चाहे जो भी हो, पौलुस उन अधिकांश विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था।

012

फिर भी, हम पौलुस द्वारा उनको लिखी पत्री और फिलेमोन, जो कुलुस्से में रहता था, को लिखी उसकी पत्री के विवरणों से कुलुस्सियों के साथ उसके संबंध के विषय में कुछ बातें सीख सकते हैं। पहली बात हम यह पढ़ते हैं कि अपने प्रतिनिधियों इपफ्रास, फिलेमोन और उनेसिमुस एंव उसके संदेशवाहक तुखिकुस के माध्यम से पौलुस का कुलुस्सियों के साथ अप्रत्यक्ष संबंध था।

013

दूसरा, यद्यपि वे आमने-सामने नहीं मिले थे, पौलुस और कुलुस्सियों ने पत्राचार के द्वारा संबंध रखा था। उदाहरण के तौर पर, इपफ्रास पौलुस के पास कुलुस्सियों के विवरण लेकर आया था। और पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया को कम से कम एक पत्री लिखी थी, अर्थात् नए नियम की कुलुस्सियों की पत्री।

014

तीसरा, पौलुस और कुलुस्सियों ने एक-दूसरे के प्रति सेवकाई की थी। उदाहरणत: उनके लिए कारावास में संघर्ष करने के अतिरिक्त पौलुस ने विशेष रूप से कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की थी। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 1:9 में लिखा :

015

इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनती करना नहीं छोड़ते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। (कुलुस्सियों 1:9)

016

पौलुस ने विशेष रूप से निरन्तर कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की और उन आशीषों को मांगा जो वह जानता था कि उन्हें बहुत लाभ प्रदान करेंगी।

017

चौथा, कुलुस्सियों ने भी पौलुस के प्रति सेवकाई की। हमें पौलुस द्वारा कुलुस्सियों और फिलेमोन को लिखी पत्री से जानकारी मिलती है कि कलुस्सियों में से इपफ्रास और उनेसिमुस ने कारावास में पौलुस से भेंट की थी। और क्योंकि कुलुस्सियों की कलीसिया ने पौलुस के पास संदेशवाहक भेजे थे इसलिए यह अनुमान लगाना तर्कसंगत है कि उन्होंने भी पौलुस के लिए प्रार्थना की थी।

018

सारांश में, यद्यपि पौलुस कभी कुलुस्सियों के अधिकांश विश्वासियों से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिला, फिर भी उनमें एक दूसरे के प्रति लगाव और सहानुभूति थी जिससे उनका संबंध वास्तविक और मजबूत हो गया था।

019

कुलुस्से की कलीसिया के साथ पौलुस के संबंध को देखने के पश्चात् अब हमें कुलुस्सियों की कलीसिया में उन विशेष लोगों के साथ उसके संबंध पर ध्यान देना चाहिए जिनके साथ वह अधिक परिचित था।

020

विशेष लोग

कुलुस्से में पौलुस के कुछ मित्र थे। वे केवल ऐसे लोग नहीं थे जिनसे उनकी मात्र जानकारी थी, बल्कि वे व्यक्तिगत मित्र थे, जिनमें से अधिकांश ने पौलुस के साथ सुसमाचार की सेवकाई में परिश्रम किया था। तीन ऐसे मित्र थे, फिलेमोन, अफफिया और अरखिप्पुस। फिलेमोन पद 1 और 2 में पौलुस के शब्दों को सुनें जो पत्री के अभिवादन की रचना करता है :

021

पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तिमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। और बहिन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम। (फिलेमोन 1-2)

022

कम से कम फिलेमोन पौलुस का घनिष्ठ मित्र था। और पौलुस द्वारा अफफिया का उल्लेख करना यह दर्शाता प्रतीत होता है कि वह उसे भी जानता था। कुछ विद्वान मानते हैं कि वह फिलेमोन के परिवार की सदस्या थी- शायद उसकी पत्नी। क्योंकि अरखिप्पुस कलीसिया में काफी सम्मानित व्यक्ति था पौलुस द्वारा उसका संबोधन सम्मानसूचक हो सकता है। परन्तु ऐसा भी संभव है कि वह भी फिलेमोन के परिवार का भाग हो, शायद उसका पुत्र।

023

कुलुस्से से पौलुस का अन्य मित्र इपफ्रास था। पौलुस ने इपफ्रास का वर्णन अपने सहकर्मी और सहकैदी के रूप मे किया, और यह भी उल्लेख किया कि इपफ्रास मसीह का विश्वासयोग्य सेवक था। जब पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया को पत्र भेजा तो इपफ्रास पौलुस के साथ कारागृह में रहा।

024

पौलुस का मित्र उनेसिमुस भी कुलुस्से से था। उनेसिमुस एक दास था जिसने फिलेमोन की संरक्षा से भागने के बाद पौलुस को खोजने का प्रयास किया प्रतीत होता है और अंत में उसने कारागृह में पौलुस की सेवा की।

025

पौलुस के अधिकांश मित्र किसी न किसी तरह से फिलेमोन से जुड़े प्रतीत होते हैं। परन्तु एक-दूसरे के साथ उनका संबंध कुछ भी हो, यह स्पष्ट है कि सामान्य रूप में कुलुस्से की कलीसिया की अपेक्षा इन मित्रों के साथ पौलुस का संबंध अधिक करीबी था। परन्तु जैसे कुलुस्सियों को लिखी उसकी पत्री दर्शाती है, यह भी स्पष्ट है कि इन मित्रों के साथ उसके संबंध ने कुलुस्से के सभी विश्वासियों के लिए उसके प्रेम को बढ़ा दिया था।

026

अत: सामान्य रूप से कहें तो कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ पौलुस का बहुत ही कम व्यक्तिगत संबंध था। परन्तु उसने इसके अनेक सदस्यों की बहुत अधिक एवं व्यक्तिगत रूप से परवाह की थी। उनकी कलीसिया के लिए उसकी संवेदनाएं गहरी थीं, केवल इसलिए नहीं कि वह एक प्रेरित था परन्तु अपने मित्रों के साथ उसके संबंध के कारण भी।

027

कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ सामान्य रूप में और कुलुस्से के विशेष लोगों के साथ पौलुस के संबंधों को जांचने के पश्चात् हम कुलुस्से की उन समस्याओं की जांच करने के लिए तैयार हैं जिनको पौलुस ने संबोधित किया। उन्होंने किन समस्याओं का सामना किया? किस बात ने पौलुस को प्रेरित किया कि वह उन्हें पत्र लिखे?

028

कुलुस्से में समस्याएं

जब पौलुस कारागृह में था, तो इपफ्रास नामक एक व्यक्ति ने उससे भेंट की जो कुलुस्से नगर का रहने वाला था। और इपफ्रास ने पौलुस को कुछ झूठी शिक्षाओं के बारे में बताया जो लिकुस घाटी की कलीसियाओं, जिसमें कुलुस्से की कलीसिया भी शामिल थी, के लिए खतरा बन रहीं थीं। अत: इन झूठी शिक्षाओं से कलीसिया की सुरक्षा करने के लिए पौलुस ने कुलुस्सियों को पत्री लिखी। यद्यपि हम उन भ्रांतियों के सभी विवरणों से परिचित नहीं हैं जो कुलुस्से की कलीसिया में आ गईं थीं, परन्तु फिर भी पौलुस की पत्री उसके विषय में अनेक बातें बताती हैं। पहला, कुलुस्से में फैली झूठी शिक्षा ने संभवत: मसीहियत को यूनानी दर्शनशास्त्र के तत्वों के साथ मिला दिया था। दूसरा, यह यहूदी व्यवस्था पर बहुत अधिक आश्रित थी। और तीसरा, इसने बल दिया कि ऐसे अनेक आत्मिक प्राणी हैं जिनकी आराधना करना और जिनको प्रसन्न करना मसीहियों के लिए आवश्यक है। आइए, पहले हम उसकी शिक्षा के उन पहलुओं की ओर देखें जो यूनानी दर्शनशास्त्र से संबंधित थे।

029

यूनानी दर्शनशास्त्र

पहली सदी के भूमध्यसागरीय संसार में एक ओर धार्मिक चिन्तन एवं दूसरी ओर बौद्धिक अध्ययन में कोई स्पष्ट अन्तर नहीं था। और फलस्वरूप शब्द दर्शनशास्त्र का प्रयोग गुप्त धर्मों के लिए किया जाता था, विशेषकर उनके लिए जो धार्मिक परंपराओं पर निर्भर थे। प्राय: इन परंपराओं में खास रहस्य और रस्में शामिल होती थीं, और इनके साथ-साथ गुप्त ज्ञान और बुद्धि भी। दुर्भाग्यवश, कुछ ऐसे ही दर्शनशास्त्र कुलुस्से की कलीसिया में प्रवेश कर रहे थे। हम कुलुस्सियों 2:1-4 में इस विषय पर पौलुस की चिंता को देख सकते हैं :

030

मैं कैसा परिश्रम करता हूँ... ताकि तुम परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहिचान लो जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे हुए हैं... कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। (कुलुस्सियों 2:1-4)

031

यहां पर पौलुस के शब्द दर्शाते हैं कि कुलुस्सियों के लोग रहस्यों, बुद्धि और ज्ञान को महत्व देते थे, इन सब बातों को यूनानी दर्शनशास्त्र और धर्म भी महत्व देते थे। अत: कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के दावों के प्रत्युत्तर में पौलुस ने बल दिया कि सच्चे रहस्य, बुद्धि और ज्ञान गैरमसीही धर्मों में नहीं परन्तु केवल मसीह में पाए जाते हैं।

032

फिर कुलुस्सियों 2:8 में पौलुस ने गैरमसीही दर्शनशास्त्र को अपना निशाना बनाया और बिल्कुल सीधे शब्दों में इसकी निन्दा की :

033

चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

034

यहां पौलुस ने झूठी शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से खोखला और कपटी दर्शनशास्त्र कहा। जिस प्रकार हम देख चुके हैं, विशिष्ट यूनानी प्रयोग में शब्द दर्शनशास्त्र परंपराओं पर आधारित धार्मिक चिन्तन को दर्शाता है, न कि बौद्धिक या विवेकपूर्ण अध्ययन को।

035

ये पद इस बात पर बल देते हैं कि कुलुस्से के झूठे शिक्षक यूनानी धर्म और गुप्त रहस्यवाद पर आधारित धारणाओं और क्रियाओं के जाल में फंस गए थे। कलीसिया में मंजूरी प्राप्त करने के लिए शायद उन्होंने मसीहियत के कुछ पहलुओं को भी अपना लिया था। परन्तु स्पष्टत: उन्होंने मसीहियत को वैसे स्वीकार नहीं किया था जैसा प्रेरितों ने सिखाया था, नहीं तो वे अपनी विचारधारा के आधार के रूप गुप्त परंपरा पर निर्भर नहीं हुए होते।

036

कुलुस्से के झूठे शिक्षकों द्वारा सिखाए गए गैरमसीही दर्शनशास्त्र में सन्यास-संबंधी के तत्व भी शामिल प्रतीत होते हैं। सन्यास भौतिक आनन्द को अनुचित रूप से टालने की क्रिया है। इसकी बुनियाद प्राय: इस गलतफहमी में पाई जाती है कि आनन्द अनैतिक है, और यह क्रिया कभी-कभी यहां तक बढ़ जाती है कि यह स्वयं को शारीरिक वेदना पहुंचाने का सुझाव देती है। कुलुस्सियों 2:20-23 में पौलुस ने ऐसे सन्यास की भर्त्सना की, उसने लिखा :

037

जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर... ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? कि यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना... इन विधियों में... शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (कुलुस्सियों 2:20-23)

038

पौलुस ने कम से कम दो कारणों से कुलुस्से में सन्यासी क्रियाओं का विरोध किया। पहला, उनकी सन्यास क्रिया संसार के आधारभूत सिद्धांतों पर आधारित थी। जिस प्रकार हम इस अध्याय में आगे देखेंगे, यह भाषा आकाशीय आत्मिक प्राणियों और आकाशीय शक्तियों को दर्शाती है। दूसरा, पाप का विरोध करने में इसका कोई महत्व नहीं था अत: इससे कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

039

सारांश में, कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने कलीसिया की उन शिक्षाओं को यूनानी परंपराओं के साथ जोड़ने का प्रयास किया जो विश्वासियों को परीक्षा के विरुद्ध बुद्धि और सामर्थ देने वाली थीं। परन्तु वास्तव में जो बुद्धि वे देने की बात कर रहे थे वह झूठी बुद्धि थी, उनकी क्रियाएं व्यर्थ थीं, और उनकी शिक्षाओं ने मसीह की सर्वोच्चता या प्रधानता का इनकार कर दिया था।

040

यूनानी दर्शनशास्त्र को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने यहूदी व्यवस्था पर आधारित कई क्रियाओं को भी शामिल कर दिया था। फिर भी, यहूदी व्यवस्था का उनका प्रयोग और समझ पारंपरिक यहूदी धर्म और उचित मसीही क्रियाओं से बहुत अलग व दूर थे।

041

यहूदी व्यवस्था

जिस प्रकार हमने दूसरे अध्यायों में देखा है, पौलुस मूसा की व्यवस्था को थामे रहा। और सुसमाचार की बढ़ोतरी के लिए वह अनेक पारंपरिक यहूदी क्रियाओं को स्वीकार करने और उनमें शामिल होने के लिए तैयार था। अत: यदि कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने वैध रीति से व्यवस्था को लागू किया होता तो पौलुस ने उनके द्वारा इसके प्रयोग की आलोचना न की होती। उसकी आलोचनाएं दर्शाती हैं कि झूठे शिक्षक यहूदी शिक्षाओं और क्रियाओं का प्रयोग गलत तरीकों से कर रहे थे।

042

कुलुस्सियों 2:16 में पौलुस ने उन अनेक यहूदी क्रियाओं का उल्लेख किया जिनका झूठे शिक्षकों ने गलत प्रयोग किया था :

043

इसलिये खाने पीने या पर्व या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। (कुलुस्सियों 2:16)

044

स्पष्टत: कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था से ली गई कुछ शिक्षाओं पर बल दिया। इनमें यहूदी पंचाग का अनुसरण जैसे कि यहूदी त्यौहारों को मनाना, नए चांद का पर्व और सब्त के दिन का पालन करना एवं खान-पान की सीमितताओं का पालन करना शामिल थे। परन्तु उन्होंने पुराने नियम की इन क्रियाओं का पालन उस रीति से नहीं किया जिस प्रकार मूसा की व्यवस्था बताती है। न ही उन्होंने उन्हें उस प्रकार से लागू किया जैसे प्रेरितों ने किया था। इसके विपरीत, पौलुस ने स्पष्ट किया कि उनकी क्रियाओं ने पुराने नियम की व्यवस्था को विकृत कर दिया एवं उनका अनुसरण करने वालों के अनन्त लक्ष्यों (की अनन्त नियति) को खतरे में डाल दिया। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 2:17-18 में लिखा :

045

क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं। कोई मनुष्य आत्म-हीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। (कुलुस्सियों 2:17-18)

046

मूसा की व्यवस्था ने पवित्र दिनों को स्वर्गदूतों की आराधना के साथ नहीं परन्तु परमेश्वर की आराधना के साथ जोड़ा था। और उसने विशेष खान-पान का सुझाव दीनता एवं सन्यास के माध्यम के रूप में नहीं परन्तु परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में अलग ठहराए जाने के चिन्ह के रूप में दिया था। किन्तु झूठे शिक्षकों ने इन नियमों को भ्रष्ट कर दिया था और उनका प्रयोग मूर्तिपूजक आराधना और गैरमसीही सन्यासवाद में किया था।

047

कुलुस्सियों 2:11-12 में पौलुस ने झूठे शिक्षकों द्वारा गलत रूप से प्रयोग किए यहूदी नियमों की सूची में खतने को भी शामिल किया :

048

उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना... और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए। (कुलुस्सियों 2:11-12)

049

स्पष्टत: कुलुस्से के झूठे शिक्षक मसीही खतने के एक प्रारूप का सुझाव दे रहे थे। अत: पौलुस ने कुलुस्सियों को यह सिखाने के लिए खतने और मसीही बपतिस्मे को एक साथ जोड़ा कि क्योंकि उन्होंने बपतिस्मा ले लिया है इसलिए उन्हें खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है।

050

सारांश में, कुलुस्सियों में पौलुस ने मूसा की व्यवस्था के गलत प्रयोग के विरुद्ध लिखा; उसने व्यवस्था के विरुद्ध नहीं लिखा। दूसरी जगह पर पौलुस ने पुष्टि की कि मूसा की व्यवस्था मसीही नैतिकता और क्रिया के लिए उचित आधार है और यह परमेश्वर के बारे में अनेक सच्ची बातें सिखती है। परन्तु यहां कुलुस्सियों में उसने झूठे शिक्षकों की विशेष शिक्षाओं और क्रियाओं का खण्डन करने पर ध्यान दिया, और यह उसने व्यवस्था की विधियों को उनके द्वारा भ्रष्ट किए जाने की निन्दा करने एवं इस बात पर बल देने के द्वारा किया कि कलीसिया इन भ्रष्ट क्रियाओं को ठुकरा दे।

051

यूनानी दर्शनशास्त्र को लागू करने और यहूदी व्यवस्था पर आधारित क्रियाओं को स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने आकाशीय आत्मिक प्राणियों की आराधना को बढ़ावा दिया और मसीहियों को उत्साहित किया कि वे इन शक्तियों की आराधना करें व उनको प्रसन्न करें।

052

आकाशीय आत्मिक प्राणी

तीन रूपों में यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कुलुस्सियों की कलीसिया आत्मिक शक्तियों की आराधना के खतरे में थी। पहला, पौलुस ने स्वर्गदूतों की आराधना के विषय में लिखा था। दूसरा, उसने शासकों और अधिकारियों के विषय को संबोधित किया था। और तीसरा, उसने इस संसार के आधारभूत सिद्धांतों से संबंधित समस्याओं के बारे में बात की थी। हम स्वर्गदूतों की आराधना के उसके उल्लेख पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ करेंगे।

053

बाइबल के अनुसार स्वर्गदूत परमेश्वर के सेवक हैं। और उन्होंने सदैव सृष्टि में भूमिका अदा की है। परमेश्वर उन्हें आत्मिक युद्ध से लेकर राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने, अपने लोगों तक संदेश पहुंचाने, विश्वासियों की भौतिक जरुरतें पूरी करने तक के अनेक कार्य सौंपता है। और प्रारंभिक कलीसिया इन भूमिकाओं के विषय में पूरी तरह से अवगत थी। जिस प्रकार हम इब्रानियों 1:14 में पढ़ते हैं :

054

क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं? (इब्रानियों 1:14)

055

स्वर्गदूत वास्तव में सेवा करने वाली आत्माएं हैं, और इसलिए उनके कार्य को पहचानना महत्वपूर्ण है। परन्तु कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के अनुसार स्वर्गदूत सेवा करने वाली आत्माओं से कहीं बढ़कर थे, वे आकाशीय शक्तियां थे, ऐसी वाणियां थे जो उन लोगों के समक्ष रहस्मयी शिक्षाओं को प्रकट करेंगे जो उनके लिए रस्मीय क्रियाएं करेंगे और उनकी आराधना करेंगे। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:18 में इन क्रियाओं की निन्दा की, जहां उसने लिखा :

056

कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। (कुलुस्सियों 2:18)

057

झूठे शिक्षकों ने दावा किया कि उन्होंने स्वर्गदूतों से दर्शन प्राप्त किए हैं, और इस आधार पर उन्होंने अन्य मसीहियों को वैसी ही उचित रस्मों को पूरा करने के लिए उत्साहित किया ताकि उन्हें भी ऐसे ही दर्शन प्राप्त हों।

058

और शायद झूठे शिक्षकों ने वास्तव में दर्शनों का अनुभव किया हो, चाहे ये परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों की अपेक्षा दुष्ट आत्माओं की ओर से हों। दूसरी ओर, उन्होंने केवल आत्म-प्रेरित या किसी औषधि से प्रेरित होकर मूर्च्छित होने का अनुभव किया हो। या वे झूठ भी बोल रहे होंगे।

059

चाहे जो भी हो, प्राचीन जगत में स्वर्गदूतों की शक्ति और प्रभाव का अतिश्योक्तिपूर्ण दृष्टिकोण असामान्य नहीं था। कुछ यहूदी शिक्षक भी स्वर्गदूतों के विषय में ऐसे ही विचार रखते थे। और कुछ यूनानी दर्शनशास्त्रों ने उनकी वाणियों और आकाशीय शक्तियों के विषय में ऐसी ही बातें सिखाई थीं। दुर्भाग्यवश, कुलुस्से के मसीहियों की इस विचारों से परिचितता ने शायद इन झूठी शिक्षाओं को तार्किक बना दिया होगा और फलस्वरूप कुलुस्सियों की कलीसिया में इन झूठी धर्मशिक्षाओं को पकड़ बनाने की अनुमति प्रदान की।

060

अब जब हमने स्वर्गदूतों की आराधना के विषय पर पौलुस के प्रत्यक्ष उल्लेख को देख लिया है, तो अब हमें शासकों और अधिकारियों के विषय पर उसके द्वारा की गई चर्चा की ओर मुड़ना चाहिए। पहली सदी की भाषा में, “शक्तियां” और “अधिकार” जैसे शब्द स्वर्गदूतों के समान आकाशीय आत्मिक प्राणियों का उल्लेख करते थे।

061

जैसा हम देख चुके हैं, कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने स्वर्गदूतों और आकाशीय आत्मिक प्राणियों की आराधना करने के लिए उत्साहित किया था। पौलुस ने इस झूठी शिक्षा का प्रत्युत्तर स्वर्ग और पृथ्वी पर पाई जाने वाली हर शक्ति और अधिकार पर मसीह की सर्वोच्चता पर बल देने के द्वारा दिया। उसने कुलुस्सियों 1:16 में यीशु की सर्वोच्चता के विषय में लिखा :

062

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)

063

यहां पौलुस ने सिंहासनों, शक्तियों, शासकों और अधिकारों का उल्लेख किया। सिंहासन और शक्तियां यूनानी शब्दों थ्रोनोस और क्यूरिटेस के अनुवादित रूप हैं। ये दोनों शब्द सामान्यत: मानवीय राजाओं और अन्य सांसारिक शासकों को दर्शाते हैं, परन्तु वे आकाशीय आत्मिक प्राणियों का उल्लेख भी कर सकते हैं। वहीं शासक और अधिकार यूनानी शब्दों आरखे और एग्जूसिया के अनूदित रूप हैं, ये सामान्यत: स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं जैसी अदृश्य शक्तियों को दर्शाते हैं।

064

कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के दृष्टिकोण में र्स्वगदूत और दुष्टात्मा जैसे आत्मिक अधिकारी उनके मानवीय रूपों से अधिक महान् थे। झूठे शिक्षकों ने स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं की शक्ति को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया, इतना अधिक कि उन्होंने इन अदृश्य शासकों को वे कार्य और योग्यताएं प्रदान कर दीं जो वास्तव में केवल मसीह के पास थीं।

065

पौलुस ने संपूर्ण सृष्टि के प्रभु के रूप में मसीह की प्रशंसा करने के द्वारा उनकी त्रुटियों को प्रकट किया। आकाशीय आत्मिक और सांसारिक अधिकारों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की अपेक्षा पौलुस ने उन्हें एक साथ दर्शाया और यह दिखाया कि आत्मिक और सांसारिक के बीच भिन्नता से अधिक समानता पाई जाती है। उन दोनों की रचना की गई है, और दोनों ही मसीह से निम्न हैं। उनमें वास्तविक अन्तर आत्मिक और सांसारिक होना नहीं, जैसा कि झूठे शिक्षक बल देते थे, परन्तु मसीह का उनके ऊपर अधिकार रखना है। फिर से उसने यह कुलुस्सियों 1:16 में कहा :

066

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की। (कुलुस्सियों 1:16)

067

पौलुस ने फिर यह कहा कि आकाशीय आत्मिक शक्तियां और मसीह एक-दूसरे के विरोधी हैं। झूठे शिक्षकों ने सोचा कि मसीह की आराधना करने और आकाशीय आत्मिक अधिकारों की आराधना करने में समानता है। परन्तु पौलुस ने दर्शाया कि झूठे शिक्षकों ने चाहे जिस प्रकार भी आकाशीय आत्मिक प्राणियों जिनकी वे आराधना करते थे, समझा हो परन्तु सत्य यह है कि केवल दुष्टात्माएं स्वयं की आराधना करने की अनुमति देती हैं। परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों का ऐसी मूर्तिपूजा से कोई लेना-देना नहीं है। और मसीह अपने शत्रुओं की आराधना करने की अनुमति नहीं देता।

068

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:15 में इस बिन्दू को संबोधित किया, जहां उसने लिखा :

069

और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई। (कुलुस्सियों 2:15)

070

यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर ने आकाशीय आत्मिक शक्तियों और अधिकारों को निशस्त्र कर दिया और उन पर विजय प्राप्त की। दूसरे शब्दों में आकाशीय आत्मिक शक्तियों और अधिकारों ने आत्मिक युद्ध में परमेश्वर का विरोध किया- वे विद्रोही, बुरी आत्माएं और परमेश्वर के शत्रु थे। वे दुष्टात्माएं थीं, न कि पवित्र स्वर्गदूत। परन्तु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर ने इन दुष्टात्माओं की युद्ध करने की योग्यता को उनसे छीन लिया और उन्हें पराजित कर अपमानित किया। ये पतन हुए, शक्तिरहित, पराजित दुष्टात्माएं, आकाशीय आत्मिक शक्तियां थीं जिनकी आराधना कुलुस्से के झूठे शिक्षक करते थे, वे जिन्हें पौलुस “शासक और अधिकारी” कहता है।

071

अब जब हमने स्वर्गदूतों, आकाशीय आत्मिक शासनों और अधिकारों के पौलुस के वर्णन की जांच कर ली है, तो अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि किस प्रकार पौलुस ने इस जगत के आधारभूत सिद्धांतों के बारे में बात की। जिस प्रकार हम कह चुके हैं, यह भी आकाशीय आत्मिक शक्तियों को दर्शाने वाला शब्द या अभिव्यक्ति थी।

072

पहली सदी में यूनानी शब्द स्टोखिया, जिसे “आधारभूत सिद्धांतों” के रूप में अनूदित किया जा सकता है, का उल्लेख सामान्यत: देवताओं, आकाशीय आत्मिक शक्तियों जो तारों और नक्षत्रों से जुड़ी होती हैं, को दर्शाने के लिए किया जाता था। स्टोइखिया का प्रयोग चार आधारभूत भौतिक तत्वों- पृथ्वी, हवा, आग और पानी- को दर्शाने के लिए भी किया जाता था। ये माना जाता था कि ये आधारभूत सिद्धांत या तत्व मानवजाति के भाग्यों को प्रभावित और नियंत्रित भी करते हैं।

073

पौलुस ने गलातियों 4:8-9 में इस प्रकार से स्टोइखिया का प्रयोग स्पष्ट रूप से किया :

074

तब तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं। पर अब... उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो? (गलातियों 4:8-9)

075

यहां शब्द “सिद्धांतों” यूनानी शब्द स्टोइखिया का अनुवाद है, और यह उनको दर्शाता है जो स्वभाव से ईश्वर नहीं हैं। अर्थात् यह उन दुष्टात्माओं को दर्शाता है जो अन्य झूठे देवताओं का रूप धरते हैं। स्टोइखिया के इसी प्रकार के अर्थ को पौलुस कुलुस्सियों 2:8 में दर्शाता है जहां उसने इन आधारभूत सिद्धांतों की निन्दा की :

076

चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

077

पौलुस ने इन आधारभूत सिद्धांतों यास्टोइखिया को झूठे शिक्षकों के दर्शनशास्त्र के आधार के रूप में दर्शाया। दूसरे शब्दों में वह तर्क दे रहा था कि झूठे शिक्षकों की धार्मिक परंपराओं को ठुकरा दिया जाना चाहिए क्योंकि वे झूठे देवताओं को संबोधित करती हैं।

078

रूचिकर रूप से इन तत्वों और आकाशीय आत्मिक शक्तियों के बारे में ऐसे ही विचार यहूदी धर्म की कुछ शाखाओं में भी पाए जाते थे, विशेषकर पुराने और नए नियम के बीच के समय के दौरान। ऐसा प्रतीत होता है कि इसने पौलुस के दिनों में झूठी शिक्षा का मंच तैयार किया जो कुलुस्से में प्रकट हुई। कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने शायद यहूदी व्यवस्थावाद, अन्यजाति के धर्मों और मसीहियत को एक साथ मिला दिया, और इन आकाशीय या ब्राह्मांडीय शक्तियों जिन्हें आधारभूत सिद्धांत या स्टोइखिया कहा जाता है, की आराधना करने को उत्साहित किया।

079

कुलुस्से की कलीसिया ने पहली सदी में कुछ वास्तविक चुनौतियों का सामना किया। अन्य कलीसियाओं से अलग, उन्होंने कभी प्रैरितिक प्रशिक्षण को प्राप्त नहीं किया था। यद्यपि कलीसिया की स्थापना परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों के द्वारा की गई थी, परन्तु यह प्रेरितों के धर्मविज्ञान पर दृढ़ता से आधारित नहीं थी। इस बात ने कुलुस्सियों के मसीहियों को इन झूठी शिक्षाओं के प्रति असुरक्षित कर दिया था। अत: जब झूठे शिक्षक यहूदी धर्म के गलत प्रयोगों और गैरमसीही मूर्तिपूजा की बातों से उन्हें भरने लगे तो उनके लिए सत्य और झूठी शिक्षा के बीच अन्तर पैदा करना मुश्किल हो गया था। बुद्धि से काम लेते हुए उन्होंने अपनी समस्या को पहचाना और पौलुस से सहायता की अपील की।

080

संरचना और विषय-वस्तु

अब जब हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है तो हम हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषय-वस्तु।

081

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री को चार मुख्य भागों में बांटा जा सकता है: 1:1-2 में अभिवादन; 1:3-14 में आभार-प्रदर्शन और मध्यस्थता का उत्साह; 1:15-4:6 में मसीहियत की सर्वोच्चता की चर्चा करने वाला मुख्य भाग; और 4:7-18 में अंतिम अभिनंदन।

082

अभिवादन

अभिवादन, 1:1-2 में, प्रेरित पौलुस को इस पत्री के आधिकारिक लेखक के रूप में पहचानता है, और यह उल्लेख भी करता है कि यह पौलुस के चेले तीमुथियुस की ओर से भी है। यह स्पष्ट है कि पौलुस मुख्य लेखक है क्योंकि केवल उसी ने पत्री पर हस्ताक्षर किए हैं। अभिवादन में एक लघु आशीष भी शामिल है जो अभिनंदन का कार्य करती है।

083

उत्साह

आभार-प्रदर्शन और मध्यस्थता के उत्साह, जो 1:3-14 में पाए जाते हैं, के बाद कुलुस्सियों की कलीसिया के विषय में वे विवरण आते हैं जो पौलुस इपफ्रास से प्राप्त करता है। इपफ्रास वह सेवक था जिसने कुलुस्से में कलीसिया की स्थापना की थी। आपको स्मरण होगा कि उसने कारावास के दौरान पौलुस के साथ समय व्यतीत किया था। पौलुस से भेंट करने के दौरान उसने कुलुस्सियों के विश्वासियों के विश्वास और प्रेम से प्रेरित को अवगत करवाया, और इन दोनों व्यक्तियों ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए प्रार्थना में काफी समय व्यतीत किया। अत: जब पौलुस ने उन्हें पत्री लिखी तो उसने उनको बताया कि किस प्रकार उसने उनके विश्वास और उद्धार के लिए परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद दिया। और उसने उन्हें अपनी निरन्तर प्रार्थना के बारे में सूचित किया कि परमेश्वर विशेष आत्मिक पहचान प्राप्त करने और भले कार्य करने की सामर्थ प्राप्त करने के द्वारा उन्हें आशीष दे।

084

अंतिम अभिनंदन

कुलुस्सियों के अंतिम भाग, 4:7-18 में आखिरी अभिनंदन का चरण, में पौलुस ने अनेक लोगों की ओर से कुलुस्सियों को अभिनंदन भेजे जो कारागृह में उसके साथ थे। अंतिम भाग दर्शाता है कि पौलुस ने तुखिकुस और उनेसिमुस की निगरानी में कुलुस्सियों को यह पत्र भेजा। तुखिकुस ने इफिसियों का पत्र भी पहुंचाया, और उनेसिमुस ने फिलेमोन को पत्र पहुंचाया। यह इस बात को दर्शाता प्रतीत होता है कि सभी तीन पत्र- कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलेमोन- लगभग एक ही समय में लिखे और भेजे गए थे।

085

आखिरी भाग लौदिकिया की कलीसिया को लिखी गई पत्री का उल्लेख भी करता है, और कुलुस्सियों को निर्देश देता है कि वे उस पत्र को भी पढ़ें एवं लौदिकियावासियों के साथ अपने पत्र को भी बांटें। यह हमें जानकारी देता है कि चाहे पौलुस ने इन पत्रियों को विशेष लोगों को विशेष परिस्थितियों में लिखे, परन्तु वह चाहता था कि ये अलग-अलग लोगों पर भी लागू हों। जैसे कि हम आगामी अध्याय में देखेंगे, यह संभव है कि पौलुस को लिखी इफिसियों की पत्री ही वह पत्री है जिसका उल्लेख यहां लौदिकियों की पत्री के रूप में हुआ है।

086

मसीहियत की सर्वोच्चता

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री का मुख्य भाग 1:15 से आरंभ होता है और 4:6 तक चलता है। यह भाग झूठे शिक्षकों के धर्म पर मसीहियत की सर्वोच्चता के विवरण प्रदान करता है।

087

मसीहियत की सर्वोच्चता के विषय पर पौलुस की चर्चा को लगभग चार मुख्य उपभागों में बांटा जा सकता है : पहला, 1:15 से 20 में मसीह की सर्वोच्चता। दूसरा, 1:21 से 2:5 तक मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता। तीसरा, 2:6 से 23 में मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता। और चौथा, 3:1 से 4:6 में मसीही जीवन की सर्वोच्चता। हम पहले भाग के साथ आरंभ करके जो स्वयं मसीह की सर्वोच्चता पर ध्यान देता है, इन सब भागों का सारांश में सर्वेक्षण करेंगे।

088

मसीह की सर्वोच्चता

झूठे शिक्षक कुलुस्सियों की कलीसिया को आकाशीय आत्मिक शक्तियों की आराधना करने को फुसलाने का प्रयास कर रहे थे। और वे यह सोचते हुए सन्यासी जीवन का सुझाव दे रहे थे कि ऐसा कठिन जीवन आत्मिक शक्तियों को संतुष्ट कर देगा और वे इन झूठे देवताओं से लाभ प्राप्त करेंगे। अत: पौलुस ने यह दर्शाने के द्वारा झूठी शिक्षाओं का खण्डन करना आरंभ किया कि मसीह सभी तथाकथित देवताओं से महान् है।

089

एक ओर पौलुस ने बल दिया कि मसीह पूरी सृष्टि पर राजा है और कि उसमें पूरी सिद्धता और अधिकार पाया जाता है। दूसरी ओर पौलुस ने सिखाया कि संसार के आधारभूत सिद्धांत उद्धार की आशीषों को प्रदान करने में और सम्मान प्राप्त करने के अयोग्य हैं।

090

पौलुस ने कुलुस्सियों 1:15 से 20 में मसीह की सर्वोच्चता के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाया, और इनमें से अधिकांश विवरण कुलुस्से की झूठी शिक्षाओं के विपरीत थे। पौलुस द्वारा बताए गए विवरणों में उसने कुलुस्सियों 1:15 में मसीह को परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, कुलुस्सियों 1:15 में सारी सृष्टि पर पहिलौठे के रूप में, कुलुस्सियों 1:16 में सृष्टि के दूत के रूप में, कुलुस्सियों 1:18 में सर्वोच्च प्रभु के रूप में, कुलुस्सियों 1:19 में परमेश्वर के देहधारी रूप में, और कुलुस्सियों 1:20 में एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाले के रूप में दर्शाया।

091

पौलुस ने यह कहते आरंभ किया कि मसीह अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप है। इस विवरण ने मसीह को झूठे शिक्षकों के देवताओं के बिल्कुल विपरीत खड़ा कर दिया। सुनें पौलुस ने किस प्रकार कुलुस्सियों 1:15-16 में यीशु का वर्णन किया :

092

वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:15-16)

093

यद्यपि पवित्रशास्त्र अनेक स्थानों पर सभी मनुष्यों के परमेश्वर के स्वरूप होने का वर्णन करता है, परन्तु पौलुस के मन में यहां कुछ ऐसा था जो केवल यीशु पर ही लागू होता था, कुछ ऐसा जो सारी सृष्टि पर उसकी शक्ति एवं अधिकार से संबंधित था। उसके मन में था कि किस प्रकार कुलुस्से में झूठे शिक्षकों ने यूनानी दर्शनशास्त्र में से “परमेश्वर के स्वरूप” अभिव्यक्ति का प्रयोग किया था।

094

पौलुस के दिनों में कम से कम कुछ दर्शनशास्त्रों में ब्राह्मांड को ही परमेश्वर का स्वरूप समझा जाता था, इसका अर्थ था कि यह परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रकाशन है और कि इसके प्रकाशन के माध्यम से ज्ञान और बुद्धि को प्राप्त किया जा सकता था। हम इस विचार के उल्लेख को प्लूटो के तिमेयुस, जो 4 ई.पू. का है, एवं थ्राइस ग्रेट हरमिस देवता के विषय में ज्ञानवादी लेखनों, जो दूसरी और तीसरी ईस्वी के हैं, में पा सकते हैं।

095

अत: जहां झूठे शिक्षकों ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में नक्षत्रों और उनके तत्वों की ओर देखा वहीं पौलुस ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मसीह को दर्शाया। उसने “परमेश्वर के स्वरूप” शब्दसमूह के यूनानी दार्शनिक अर्थ को यह दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया कि मसीह, न कि झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना की जाने वाली दुष्टात्माएं, परमेश्वर का स्थायी प्रकाशन है, वह जिसकी ओर विश्वासियों को परमेश्वर की महान् बुद्धि और ज्ञान पाने के लिए देखना है।

096

दूसरा, पौलुस ने उल्लेख किया कि मसीह सारी सृष्टि के ऊपर पहलौठा है। फिर से पौलुस ने झूठे शिक्षकों का खण्डन करने में अपने शब्दों का चयन बहुत ही ध्यान से किया। सुनें उसने कुलुस्सियों 1:15-16 में मसीह के विषय में क्या लिखा :

097

वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:15-16)

098

यूनानी शब्द प्रोटोकोस, जिसका अनुवाद यहां “पहिलौठा” है, का प्रयोग प्राय: जन्म लेने के क्रम की अपेक्षा महानता और अधिकार को दर्शाने के लिए किया जाता है।

099

प्राचीन जगत में परिवार में यह आवश्यक नहीं था कि सबसे पहले जन्मा बच्चा ही पहिलौठा हो। बल्कि पहिलौठा उसे माना जाता था जिसके पास उत्तराधिकार के सबसे अधिक अधिकार हों। सामान्यत: पहिलौठा वह माना जाता था जो पिता की मृत्यु के बाद परिवार को चलाए। उदाहरण के तौर पर सबसे बड़े लड़के को “पहिलौठा” माना जाता था चाहे उससे बड़ी उसकी बहनें भी हों। और इससे बढ़कर, छोटे लड़के को पहिलौठा माना जा सकता था यदि किसी कारवणवश सबसे बड़े लड़के को उसके पद से हटा दिया गया हो।

100

अब हमें यह दर्शाना चाहिए कि कुछ प्रमुख धार्मिक समूहों ने इस शब्द “पहिलौठे” को यह दर्शाते हुए गलत रूप से समझा है कि संसार की सृष्टि से पहले मसीह का “जन्म” हुआ था। अर्थात् वे मानते हैं कि मसीह सदैव से एक सृजा हुआ प्राणी है, और इसीलिए वह शक्ति और अधिकार में पिता परमेश्वर के तुल्य नहीं है। परन्तु पज्ञैलुस ने मसीह के “पहिलौठे” होने के स्तर को पूरी सृष्टि के ऊपर उसके अधिकार और महानता के साथ जोड़ा, और ऐसे समय के विषय में कुछ नहीं कहा जब मसीह का अस्तित्व न हो।

101

जब पौलुस ने कहा कि मसीह संपूर्ण सृष्टि के ऊपर पहिलौठा है, तो उसका अर्थ था कि मसीह ही वह है जिसके पास पिता का जन्मअधिकार है, यह नहीं कि मसीह का जन्म या उसकी रचना दूसरों से पहले हुई थी। उसका अर्थ यह नहीं है कि मसीह सृष्टि का अंश है, परन्तु यह कि मसीह इसके ऊपर प्रभु है। कि झूठे शिक्षकों के पास किसी को किसी प्रकार की आशीष देने का कोई अधिकार नहीं है। मसीह, और केवल मसीह पहिलौठा है, वह जिसके पास परमेश्वर की सभी आशीषों का उत्तराधिकार है, और केवल वही इन्हें दूसरों को प्रदान कर सकता है।

102

तीसरा, पौलुस ने कहा कि मसीह सृष्टि का दूत है, वह जिसके माध्यम से परमेश्वर ने इस ब्राह्मांड की रचना की है। यहूदी रहस्यवाद ने प्राय: सृष्टि की रचना में स्वर्गदूतों को प्रमुख भूमिकाएं प्रदान की थीं, ऐसी भूमिकाएं जो बाइबल केवल परमेश्वर और मसीह को प्रदान करती है न कि स्वर्गदूतों को। और यूनानी दर्शनशास्त्र में तत्व-ज्ञान और अन्य आकाशीय शक्तियों को सामान्यत: ऐसी ही भूमिकाएं प्रदान की गई थीं। परन्तु पौलुस ने बल दिया कि मात्र मसीह ही सृष्टि का दूत है और ये दूसरी शक्तियां उससे निम्न और उसके अधीन में हैं। सुनें उसने कुलुस्सियों 1:16 में क्या लिखा :

103

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)

104

जिस प्रकार हम पहले ही देख चुके हैं कि शब्द “शासक और अधिकारी” आकाशीय आत्मिक शक्तियों को दर्शाते हैं, अर्थात् वे दुष्टात्माएं जिनकी आराधना झूठे शिक्षक करते थे। और पौलुस के अनुसार ये सभी शासक और अधिकारी मसीह के अधीन हैं। सृष्टि के दूत के रूप में मसीह की प्रमुखता उसे सृष्टि की प्रत्येक वस्तु से महान् बनाती है।

105

चौथा, मसीह महान् प्रभु है क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसे कलीसिया के सिर के रूप में रखा है। कुलुस्सियों 1:18 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

106

और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। (कुलुस्सियों 1:18)

107

पौलुस ने तर्क दिया कि मसीह को कलीसिया में और मृतकों के बीच विशेष स्तर प्रदान किया गया है “कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।” पिता पुत्र को सम्मान प्रदान करना और उसे संपूर्ण सृष्टि का प्रभु बनाना चाहता था। अत: कोई तन्त्र जो मसीह की अद्वितीय सर्वोच्चता का स्थान लेने या उसके योग्य ठहरने का प्रयास करता है वह अवश्य ही झूठा या गलत है।

108

पांचवां, पौलुस ने स्पष्ट किया कि मसीह देहधारी परमेश्वर है। इस असाधारण कथन ने गैरमसीही यूनानी धारणाओं और यहूदी रहस्यवाद के तथाकथित शासकों और अधिकारियों के बारे में प्रत्येक दावे को बौना या निम्न कर दिया। कुलुस्सियों 1:19 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

109

क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। (कुलुस्सियों 1:19)

110

परमेश्वर की सारी संपूर्णता मसीह में वास करती है जिसने मसीह को सर्वोच्च परमेश्वर का देहिक रूप बना दिया। कुलुस्से में झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना प्राप्त करने वाले शासक और अधिकारी निम्न आकाशीय आत्मिक प्राणी थे। यद्यपि यूनानी दर्शनशास्त्र में उन्हें कभी-कभी ईश्वर कहा जाता है, परन्तु सामान्यत: उन्हें महान् ईश्वरों के रूप में कभी नहीं माना गया।

111

इसके विपरीत परमेश्वर की सारी संपूर्णता यीशु मसीह में वास करती है। इसका अर्थ है कि मसीह उस परमेश्वर का देहधारी रूप है जिसने ब्राह्मांड की रचना की है, वह जिसकी सबको प्रभु के रूप में आज्ञा माननी आवश्यक है। यह मसीह को झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना प्राप्त करने वाले निम्न आकाशीय आत्मिक प्राणियों से कहीं अधिक महान् बनाता है।

112

अंत में, पौलुस ने मसीह को परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाले के रूप में प्रकट किया। पौलुस ने कुलुस्सियों 1:19-20 में मसीह के इस तथ्य या सच्चाई को स्पष्ट किया :

113

क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है... उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। (कुलुस्सियों 1:19-20)

114

परमेश्वर की योजना है कि वह “सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कराए”। अर्थात् यीशु मसीह वह दूत है और माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर संसार से पाप को साफ कर रहा है और मनुष्यजाति के साथ मेल कर रहा है।

115

झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना की जाने वाली कमजोर शक्तियां दुष्टात्माएं थी जिनका काम मसीह की महिमा और अधिकार को चुराना और इसका प्रयोग अपने आराधकों पर अत्याचार करने में करना था। उनके लक्ष्य तुच्छ थे और उनमें अपने आराधकों को अर्थपूर्ण रूप में आशीष देने की योग्यता नहीं थी। परन्तु मसीह परमेश्वर की ओर जाने वाला मार्ग था। जो सुसमाचार पौलुस प्रचार कर रहा था वह यह था कि परमेश्वर पूरी सृष्टि को पापरहित, पहले वाली और अनन्त धन्य अवस्था में पुन: स्थापित कर रहा था। और वह ऐसा केवल और केवल यीशु मसीह के द्वारा कर रहा था। केवल यीशु के द्वारा ही पापों की क्षमा मिल सकती है और परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया जा सकता है। झूठे शिक्षकों की तुच्छ और शक्तिरहित आत्माओं की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर के पास पहुंच और उसकी अनन्त आशीषें यीशु मसीह में सेंत-मेंत उपलब्ध हैं।

116

कम से कम इन छ: रूपों में- मसीह परमेश्वर के स्वरूप में, सारी सृष्टि के ऊपर पहिलौठा, सृष्टि का दूत, महान् प्रभु, देहधारी परमेश्वर और एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाला- मसीह उन सब तथाकथित देवताओं से सर्वोच्च है जिनकी आराधना कुलुस्से में झूठे शिक्षक करते थे।

117

मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता

आकाशीय आत्मिक शक्तियों पर मसीह की सर्वोच्चता को दर्शाने के पश्चात पौलुस ने मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता का दावा किया। उसके तर्क का यह भाग कुलुस्सियों 1:21 से 2:5 में पाया जाता है।

118

पौलुस ने तर्क दिया कि क्योंकि मसीह झूठे देवताओं से महान् है इसलिए मसीह के सेवक भी उनसे बढ़कर हैं जो उन झूठे देवताओं की सेवा करते हैं। पौलुस के तर्क में पांच मुख्य विचार थे- मसीही सुसमाचार के द्वारा प्राप्त मेलमिलाप, जिसका उल्लेख उसने कुलुस्सियों 1:21-23 और 2:5 में किया; कुलुस्सियों 1:24 में पौलुस की अपनी निस्वार्थता; कुलुस्सियों 1:25 में पौलुस को प्राप्त दैवीय/स्वर्गीय आदेश; कुलुस्सियों 1:25-28 और 2:2-4 में सुसमाचार द्वारा प्रदान किया गया श्रेष्ठ प्रकाशन; और मसीह के सेवकों को मिलने वाली सामर्थ जिसे पौलुस ने कुलुस्सियों 1:29 से 2:1 में संबोधित किया। पौलुस ने उस मेलमिलाप की बात करने के द्वारा चर्चा आरंभ की जिसका अनुभव कुलुस्सियों ने सुसमाचार के द्वारा पहले से ही कर लिया था। जिस प्रकार हम कुलुस्सियों 1:22-23 में पढ़ते हैं :

119

उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे... यही सुसमाचार तुमने सुना है... और जिसका मैं, पौलुस, सेवक बना। (कुलुस्सियों 1:22-23)

120

मसीह के सेवक श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे ऐसे सुसमाचार का प्रचार करते हैं जो विश्वासियों का परमेश्वर से मेलमिलाप करवाता है।

121

कुलुस्से में झूठे शिक्षकों ने दुष्टात्माओं को संतुष्ट करने के लिए लोगों को उत्साहित किया और शायद परमेश्वर के साथ मेलमिलाप का प्रस्ताव भी दिया। परन्तु वास्तविकता में उनका कोई मेलमिलाप नहीं हुआ क्योंकि उनके तथाकथित सुसमाचार में उद्धार प्रदान करने की कोई शक्ति नहीं थी।

122

इसके विपरीत, कुलुस्सियों के विश्वासियों ने उस सच्चे मेलमिलाप का अनुभव कर लिया था जो परमेश्वर के सेवकों द्वारा प्रचारित सच्चे सुसमाचार के द्वारा मिलता है। उन्हें पहले से क्षमा मिल चुकी थी और वे परमेश्वर के समक्ष मसीह की धार्मिकता को धारण किए हुए खड़े थे। इस बात ने शायद उनको पौलुस की बात में विश्वास करने और झूठे शिक्षकों को ठुकरा देने के लिए उत्साहित किया होगा।

123

दूसरा, पौलुस ने कलीसिया के अपने कष्टों के बारे में बात करते हुए स्वयं की निस्वार्थता को दर्शाया। जैसा कि उसने कुलुस्सियों 1:24 में लिखा :

124

अब मैं... मसीह के क्लेशों की घटी... अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ। (कुलुस्सियों 1:24)

125

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा था, पौलुस के कष्टों ने सुसमाचार के लिए एक शक्तिशाली गवाही प्रदान करने, कलीसिया को उत्साहित करने और मसीह के कष्टों को पूरा करने के द्वारा कलीसिया को आशीष प्रदान की थी। इसके विपरीत, कुलुस्से में झूठे शिक्षकों को न तो कारावास में डाला गया और न ही उन्हें सताया गया। कलीसिया के लिए कष्ट सहने की अपनी तत्परता को दर्शाने के द्वारा पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि मसीह के सेवक झूठे शिक्षकों की तुलना में अधिक निस्वार्थी हैं।

126

तीसरा पौलुस ने अपने दैवीय/स्वर्गीय आदेश के बारे में बात की। कुलुस्से में आत्म-नियुक्त झूठे शिक्षकों के विपरीत प्रेरित के रूप में पौलुस की नियुक्ति स्वयं प्रभु ने की थी। पौलुस ने अपने आदेश का वर्णन कुलुस्सियों 1:25 में किया :

127

मैं परमेश्वर के उस प्रबन्घ के अनुसार (कलीसिया का) सेवक बना जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूं। (कुलुस्सियों 1:25)

128

जैसा हम यहां पर देखते हैं, स्वयं परमेश्वर ने पौलुस को एक प्रेरित के रूप में बुलाया था।

129

अपनी जवानी के दिनों में, पौलुस कलीसिया को सताने वाला जोशीला व्यक्ति था। परन्तु तब पुनर्जीवित प्रभु पौलुस के समक्ष प्रकट हुआ और उसका हृदयपरिवर्तन किया। उस समय यीशु ने पौलुस को अपना प्रेरित भी नियुक्त किया और यीशु के लिए बोलने का उसे अधिकार प्रदान किया। इसका अर्थ था कि पौलुस का अधिकार झूठे शिक्षकों के अधिकार से कहीं अधिक श्रेष्ठ था।

130

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:8 में उनकी शिक्षाओं का वर्णन किया, जहां उसने लिखा :

131

चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

132

झूठे शिक्षक उन विचारों पर निर्भर रहे जिनकी खोज मूर्तिपूजक लोगों ने की थी। पौलुस के विपरीत, उनके पास परमेश्वर की ओर से बोलने का अधिकार नहीं था और उन्हें परमेश्वर द्वारा कलीसिया को सिखाने के लिए भी नहीं बुलाया गया था।

133

चौथा, पौलुस के द्वारा प्राप्त किया गया प्रकाशन उससे श्रेष्ठ था जिसका प्रमाण झूठे शिक्षकों ने दिया था। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 2:4 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

134

यह मैं इसलिये कहता हूँ, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। (कुलुस्सियों 2:4)

135

पौलुस ने झूठे शिक्षकों के शब्दों को “कपटी” कहा। और इसके विपरीत उसके अपने शब्दों ने सत्य को प्रकट किया और मसीहियों को झूठे शिक्षकों के भ्रम से बचने में सहायता की।

136

वास्तव में, गलातियों 1:15-18 के अनुसार पौलुस ने परमेश्वर की ओर से प्रकाशनों को प्राप्त करते हुए अरब के रेगिस्तान और दमिश्क में तीन वर्ष बिताए। फिर भी, झूठे शिक्षक उन परंपराओं पर निर्भर रहे जो मनुष्यों द्वारा उनको सौंपी गई थीं। इस बात ने पौलुस के प्रकाशनों को झूठे शिक्षकों के प्रकाशनों से अति श्रेष्ठ बना दिया।

137

अब यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पौलुस के प्रकाशन परमेश्वर की ओर से थे, और कि वे कुलुस्से में झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं के समान मानवीय खोज नहीं थे। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि पौलुस के प्रकाशनों की विषय-वस्तु भी कुलुस्से की झूठी शिक्षाओं से श्रेष्ठ थी। कुलुस्सियों की कलीसिया को लिखी उसकी पत्री में पौलुस ने अपने प्रकाशनों को वे “रहस्य” जो परमेश्वर ने उस पर प्रकट किए थे, एवं “बुद्धि और ज्ञान के भण्डार” कहा। और पौलुस ने इस भण्डार को अपने पास नहीं रखा- यह वहीं सुसमाचार था जिसका प्रचार उसने किया था। ये मसीह के बलिदान के आधार पर विश्वास के माध्यम से प्राप्त किए गए परमेश्वर के साथ मेलमिलाप और उसके राज्य में भागीदारी के सत्य थे। यह घोषणा झूठे शिक्षकों के हर प्रस्ताव से कहीं अधिक बेहतर थी।

138

पांचवा, पौलुस ने मसीह के सेवकों को मिलने वाली श्रेष्ठ सामर्थ के बारे में लिखा और इस सत्य को दर्शाया कि परमेश्वर अपने सेवकों को सामर्थ प्रदान करता है। पौलुस ने अपनी शक्ति से परिश्रम नहीं किया था। बल्कि परमेश्वर ने अपने प्रेरित के रूप में पौलुस को कार्य करने और कष्ट सहने के लिए सामर्थ दी थी और उसे प्रेरित किया था। पवित्र आत्मा ने पौलुस को विस्मित कर देने वाले वरदान प्रदान किए थे जिसके द्वारा उसे बोलने के लिए शब्द एवं बोलने के अवसर प्रदान किए, और अपनी गवाही की पुष्टि के लिए चमत्कार प्रदान किए ताकि पौलुस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बढ़ा सके। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 1:29 में लिखा :

139

मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ। (कुलुस्सियों 1:29)

140

पौलुस का अधिकार, उसके शब्द एवं उसकी सामर्थ स्वयं परमेश्वर की ओर से थे। और कुलुस्से के झूठे शिक्षक इससे तुलना नहीं कर पाए। उनकी सेवकाई और उनका संदेश शक्तिरहित एवं निरर्थक थे।

141

सारांश में, हम देखते हैं कि पौलुस ने मसीही सुसमाचार के द्वारा प्राप्त मेलमिलाप, उनकी निस्वार्थता, उनके स्वर्गीय आदेश, उनके द्वारा प्राप्त प्रकाशन, और पवित्र आत्मा द्वारा पाई जाने वाली सामर्थ के बारे में लिखकर मसीह के सेवकों की श्रेष्ठता पर बल दिया।

142

मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता

मसीह और फिर मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता पर बल देने के पश्चात् पौलुस ने 2:6-23 में मसीह में पाए जाने वाले उद्धार की सर्वोच्चता पर बल दिया।

143

मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता पर पौलुस की चर्चा दो मुख्य भागों में बांटी जाती है- कुलुस्सियों 2:6-15 में मसीह के साथ संयोजित जीवन के लिए पौलुस की प्रशंसा, और कुलुस्सियों 2:16-23 में तत्व-ज्ञान के अधीन रहने वाले जीवन की निन्दा।

144

पहले खण्ड में पौलुस मसीह के साथ संयोजित होने पर मिलने वाले उद्धार के अनेक लाभों का वर्णन किया, उसने कुलुस्सियों 2:6-10 में मसीह के प्रभुत्व के भले और शक्तिदायक पहलुओं के साथ आरंभ किया।

145

इन पदों में पौलुस ने दर्शाया कि क्योंकि मसीह हमारा प्रभु है इसलिए हम उसमें रोपे गए हैं, उस पर आधारित हैं और उसमें सामर्थ को प्राप्त करते हैं, एवं फलस्वरूप उसके प्रति असीम आभार महसूस करते है। जिन्होंने झूठे शिक्षकों का अनुसरण किया वे उन निम्न आत्मिक शक्तियों के बंदी बन गए जिनकी वे आराधना करते थे, परन्तु जो मसीह के प्रभुत्व के अधीन हैं उन्हें उसके साथ राज्य करने का अधिकार दिया गया है। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 2:9-10 में लिखा :

146

क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। (कुलुस्सियों 2:9-10)

147

मसीह का हर शक्ति के ऊपर दैवीय अधिकार है। और क्योंकि विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए वे दैवीय अधिकार को आपस में बांटते हैं।

148

दूसरा, पौलुस ने उस आत्मिक सामर्थ का उल्लेख भी किया जो विश्वासियों में पाई जाती है क्योंकि हम मसीह के साथ जुड़े हुए हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:11-13 में इस आशीष को स्पष्ट किया। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 2:12 में उसने लिखा :

149

(तुम) उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। (कुलुस्सियों 2:11-13)

150

क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं तो विश्वासी न केवल मसीह की मृत्यु में सहभागी होते हैं जो हमें क्षमा प्रदान करती है बल्कि मसीह के पुनरुत्थान और जीवन में भी जिससे हमारी आत्माओं को पुन: जीवन मिलता है।

151

तीसरा, क्योंकि विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए हम पाप से क्षमा प्राप्त करते हैं और व्यवस्था के कामों के द्वारा उद्धार अर्जित करने से हम मुक्त हो गए हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:13-15 में इन विचारों को व्यक्त किया। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 2:13-14 में लिखा :

152

हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, और विधियों का वह लेख... मिटा डाला और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। (कुलुस्सियों 2:14-15)

153

परमेश्वर की व्यवस्था पाप में गिरी मनुष्य जाति को पाप की सजा सुनाती है। परन्तु क्योंकि हम मसीह में उसकी मृत्यु से जुड़े हुए हैं, हम उस मृत्यु का अनुभव कर चुके हैं जिसकी मांग व्यवस्था करती है। हम हमारी सजा पूरी कर चुके हैं जिससे अब हम सब सजाओं से मुक्त हैं।

154

मसीह में आशीषों की इस पृष्ठभूमि में पौलुस ने कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के संदेश की निन्दा की। मसीह के साथ संयोजित जीवन की पहचान मसीह के प्रभुत्व की आशीषों के साथ की जाती है। परन्तु तत्व-ज्ञान के अधीन में पाया जाने वाला जीवन उसे रचित प्राणियों मात्र के निरंकुश प्रभुत्व में रख देता है। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 2:16-18 में लिखा, इसका परिणाम न केवल दण्ड में आता है, बल्कि इससे वे आशीषे खोई जा सकती हैं जो मसीह प्रदान करता है।

155

इससे बढ़कर, जहां मसीह के साथ संयोजन आत्मिक सामर्थ प्रदान करता है वहीं तत्व-ज्ञान के अधीन होने का परिणाम मसीह से अलग हो जाना होता है, और इस प्रकार आत्मिक दुर्बलता में भी। जैसे कि पौलुस ने कुलुस्सियों 2:19 में दर्शाया है :

156

और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्‍वर की ओर से बढ़ती जाती है। (कुलुस्सियों 2:19)

157

अंत में, जहां मसीह के साथ संयोजन क्षमा प्रदान करता है और व्यवस्था के दण्ड से मुक्त करता है, वहीं तत्व-ज्ञान के अधीन रहना केवल सन्यासवाद की ओर ही प्रेरित करता है। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:23 में ऐसे सन्यासवाद की निरर्थकता पर टिप्पणी की :

158

इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (कुलुस्सियों 2:23)

159

कुलुस्से में झूठे शिक्षकों के झूठे देवताओं के अधीन रहने के फलस्वरूप बिताए गए कठिन जीवन का पाप के विरुद्ध कोई उपयोग नहीं था। यद्यपि ऐसे कठिन जीवन का परिणाम आशीषों की ओर प्रेरित करना था, परन्तु दुष्टात्माओं के पास किसी को भी आशीष देने की शक्ति नहीं थी। इसके विपरीत, मसीह के साथ संयोजन ने अधीनता की अपेक्षा स्वतंत्रता प्रदान की और विश्वासी के ऊपर से पाप की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

160

मसीह के साथ संयोजन में रहने वाले जीवन और तत्व-ज्ञान के अधीन में रहने वाले जीवन के इन विपरीत पहलुओं के द्वारा पौलुस ने दर्शाया कि सच्चे मसीही सुसमाचार में प्रदान किया जाने वाला उद्धार कुलुस्से के झूठे शिक्षकों द्वारा प्रस्तावित तथाकथित आशीषों से कहीं अधिक बेहतर था।

161

मसीही जीवन की सर्वोच्चता

अंत में, मसीह और उसके सेवकों की सर्वोच्चता और मसीह के सुसमाचार में प्रस्तावित उद्धार को संबोधित करने के बाद, पौलुस कुलुस्सियों 3:1-4:6 में मसीही जीवन की सर्वोच्चता की ओर मुड़ा। इस भाग में पौलुस ने दर्शाया कि मसीही जीवनशैली झूठे शिक्षकों द्वारा सुझाई गई जीवनशैली से नैतिक रूप से बहुत अधिक बेहतर है।

162

कुलुस्से के झूठे शिक्षक नैतिक जीवन के प्रति काफी चिंतित प्रतीत हुए। आखिरकार, उनके कठिन जीवन का लक्ष्य शारीरिक आनन्द की उपेक्षा करना था। और कुछ रूपों में ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार के पापों के विषय में उनके नैतिक स्तर या लक्ष्य मसीही कलीसिया के स्तरों या लक्ष्यों के अनुरूप थे। परन्तु उनके दृष्टिकोण में एक समस्या थी। सरल रूप में कहें तो सन्यासवाद कार्य नहीं करता। बात का निचोड़ यह है कि पापी मनुष्यजाति में पाप का विरोध करने की शक्ति का अभाव है। अत: पाप से दूर रहने का हम जितना भी प्रयत्न करें, हम सदैव हार का ही सामना करते हैं। इसका अर्थ है कि नैतिकतापूर्ण जीवन जीने के लिए, परमेश्वर द्वारा हमारे लिए निर्धारित नैतिक स्तरों की आज्ञा मानने के लिए हमें किसी हमसे बड़े और हमसे अधिक शक्तिशाली पर निर्भर रहना होगा।

163

कुछ रूपों में मसीही जीवन पर पौलुस की शिक्षाएं झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं के समान प्रतीत हुई। वास्तव में, पौलुस ने यहां तक भी कहा कि स्वर्गीय और आत्मिक बातों पर ध्यान देना सही है न कि पृथ्वी की या सांसारिक बातों पर। कुलुस्सियों 3:2 में उसके शब्दों को सुनें :

164

पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। (कुलुस्सियों 3:2)

165

पौलुस के अनुसार हमें पृथ्वी की बातों से अधिक आत्मिक और स्वर्गीय बातों को अधिक महत्व देना चाहिए। इसी दृष्टिकोण का प्रयोग सन्यासवादी शिक्षकों द्वारा भी किया गया था, चाहे सतही तौर पर ही। सन्यासवादी शिक्षकों के समान पौलुस ने शारीरिक आनन्द के विरुद्ध भी शिक्षा दी। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 3:5 में उसने लिखा :

166

इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है। (कुलुस्सियों 3:5)

167

पौलुस इस बात में झूठे शिक्षकों से सहमत था कि शरीर के कार्यों में लिप्त रहना बुरा है। परन्तु वह इस बात से उनसे असहमत था कि ऐसे पाप से किस प्रकार बचा जाए।

168

पौलुस और झूठे शिक्षक कई अन्य बातों में भी एक-दूसरे के विरुद्ध थे। उदाहरण के तौर पर झूठे शिक्षकों ने बाहरी रूप से माना कि उन्हें स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाना चाहिए, परन्तु उनकी जिन शिक्षाओं की पौलुस ने आलोचना की वे सभी सांसारिक थीं। हालांकि उनके पास आत्मिकता का लक्ष्य हो, परन्तु उन्होंने निरन्तर सांसारिक बातों पर ध्यान लगाकर उस लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास किया। कुलुस्सियों 2:21 में पौलुस ने उनकी शिक्षाओं का सार इस प्रकार से दिया :

169

यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना। (कुलुस्सियों 2:21)

170

यद्यपि सन्यासवादियों ने आत्मिक क्षेत्र की ओर संकेत करने का दावा किया, परन्तु उनकी शिक्षाओं का केन्द्र सांसारिक, और शारीरिक विषय ही थे।

171

सन्यासवादी अपनी सन्यासी क्रियाओं में इतना लवलीन रहे कि उन्होंने उन आदर्शों पर बल देने की परवाह नहीं की जो वास्तव में स्वर्गीय और आत्मिक थे। यद्यपि उनके लक्ष्य आत्मिक रहे हों, परन्तु उनके सभी प्रयास पृथ्वी की बातों पर ही लगाए गए।

172

दूसरी ओर पौलुस ने उन विशेष मार्गों को सिखाया जिन पर विश्वासी केन्द्रित रह सकते हैं और उन कार्यों को करने का प्रयास कर सकते हैं जिनका आधार आत्मिक हो। उसने बल दिया कि वे अपने सांसारिक पापों पर विराम लगाएं, परन्तु वह यह भी जानता था कि एक पतित, मानवीय दृष्टिकोण से ऐसा होना असंभव था। कुलुस्सियों 3:9-11 में उसके शब्दों को सुनें :

173

तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है... मसीह सब कुछ और सब में है। (कुलुस्सियों 3:9-11)

174

पौलुस ने स्पष्ट किया कि नैतिक जीवन की कुंजी यह है- विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं- मसीह सब में है। और मसीह के साथ इस संयोजन के कारण, हमारे पास “नए मनुष्यत्व” या “नए स्वभाव” हैं। और हम परमेश्वर द्वारा आंतरिक रूप ये नए होते जाते हैं। यह संयोजन और नवीनीकरण नैतिक रूप से जीने में हमारी सहायता करता है।

175

झूठे शिक्षक सच्चे विश्वासी नहीं थे। उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया था, और इसलिए वे मसीह से जुड़े हुए नहीं थे। उनके पास नए स्वभाव भी नहीं थे और परमेश्वर के द्वारा उनका नवीनीकरण भी नहीं हो रहा था। फलस्वरूप, पाप से बचने के उनके सभी प्रयास असफल हो गए थे।

176

परन्तु विश्वासी मसीह से जुड़े होते हैं, और इसलिए परमेश्वर के नैतिक स्तरों का पालन करने के लिए हमें सामर्थ मिलती है। परन्तु पौलुस इसी विचार पर नहीं रूका रहा। बल्कि उसने कुछ व्यावहारिक मार्गों का प्रस्ताव दिया जिनके द्वारा विश्वासी पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए अपनी स्वयं की शक्ति पर आश्रित रहने की अपेक्षा परमेश्वर की सामर्थ पर आश्रित रह सकते हैं। कुलुस्सियों 3:12 में उसके निर्देशों को सुनें :

177

इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। (कुलुस्सियों 3:12)

178

विश्वासी उन पापों पर ध्यान लगाने की अपेक्षा, जिनसे बचने का हम प्रयास कर रहे हैं, करूणा और दया जैसे स्वर्गीय, आत्मिक सद्गुणों पर बल देने के द्वारा नैतिक जीवन जीने में सफल हो सकते हैं। और हम झूठे देवताओं की मूर्खतापूर्ण मांगों को पूरा करने के प्रयासों पर ध्यान लगाने की अपेक्षा हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और हमारे चुनाव पर ध्यान लगाकर नैतिक रूप से जीवन जीने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

179

नैतिक जीवन जीने के लिए पौलुस की योजना दो महत्वपूर्ण रूपों में झूठे शिक्षकों की योजना से श्रेष्ठ थी। पहला, यह प्रभावशाली थी क्योंकि यह मनुष्यों की शक्ति पर निर्भर होने की अपेक्षा परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर थी। दूसरा, यह प्रभावशाली थी क्योंकि इसने पाप और सांसारिक विषयों से ध्यान को हटाकर सकारात्मक सद्गुणों और आत्मिक बातों पर लगाया। और महत्वपूर्ण बात यह थी कि पौलुस की योजना काम कर गई थी। सन्यासी क्रियाओं के विपरीत जो पाप के विरुद्ध कोई महत्व नहीं रखती, पौलुस की विधी ने वास्तव में नैतिक जीवन को संभव बना दिया था।

180

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की रचना झूठे शिक्षकों द्वारा फैलाई गई मूर्तिपूजक शिक्षाओं को संबोधित करने के लिए की गई थी। झूठे शिक्षकों ने आत्मिक शक्तियों से संबंध बनाने के गैरमसीही तरीकों और धार्मिकता को प्राप्त करने के अप्रभावी मार्गों का सुझाव दिया था। इन समस्याओं के प्रत्युत्तर में पौलुस ने मसीह का प्रचार किया। उसने प्रभु और राजा के रूप में मसीह की सर्वोच्चता, और मसीह के सेवकों की श्रेष्ठता का प्रचार किया। उसने मसीह में उद्धार के अतुल्य महत्व, और मसीही जीवन के माध्यम से पाप पर विजय पाने का प्रचार किया। हर बिन्दू पर उसने स्पष्ट किया कि जिन बातों का दावा झूठे शिक्षकों ने किया था उनको पूरा केवल मसीह ही कर सकता है।

181

आधुनिक प्रयोग

अब जब हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि और इसकी संरचना एवं विषय-वस्तु की जांच कर ली है तो हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए- पौलुस द्वारा कुलुस्सियों को लिखी पत्री का आधुनिक प्रयोग। किस प्रकार हम आधुनिक मसीही इन प्राचीन शिक्षाओं को हमारे जीवन में लागू कर सकते हैं?

182

यद्यपि कई ऐसे तरीके हो सकते हैं जिनमें हम हमारे आधुनिक जीवनों में पौलुस की शिक्षाओं को सही रीति से लागू कर सकते हैं, परन्तु हम उन दो प्रकार के प्रयोगों पर ध्यान देंगे जो पौलुस और उसके मूल श्रोताओं से निकटतम रूप से संबंधित थे- केवल मसीह के साथ वफादार बने रहने की आवश्यकता; और दिन-प्रतिदिन के आधार पर आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने का महत्व। आइए केवल मसीह के साथ वफादार बने रहने की आवश्यकता पर ध्यान देने के साथ शुरु करें।

183

मसीह के प्रति वफादारी

कुलुस्सियों की कलीसिया में विश्वासियों को मसीह की आराधना के साथ अन्य आकाशीय आत्मिक शक्तियों की आराधना को जोड़ने के लिए उत्साहित किया जा रहा था। यद्यपि इन अन्य आकाशीय शक्तियों को दुष्टात्माओं के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया था, परन्तु हम देख चुके हैं कि जो भी शक्ति उनके पास थी और जो भी लाभ उनके आराधकों को प्राप्त हुए वे दुष्टात्मा से संबंधित थे। परन्तु चाहे ये शक्तियां दुष्टात्माएं या तत्व-ज्ञान या स्वर्गदूत हों, कुलुस्सियों की कलीसिया को उनकी आराधना नहीं करनी चाहिए थी। दुर्भाग्यवश, पहली सदी के सामाजिक संदर्भ ने इस विषय के सत्य को देखना कुलुस्सियों के लिए कठिन कर दिया था।

184

पिछली सदी के दौरान रोमी साम्राज्य में प्रबल धार्मिक विचार बहुईश्वरवादी थे। अर्थात् अधिकांश लोग मानते थे कि अनेक देवताओं और आत्मिक शक्तियों का अस्तित्व है। और इस साम्राज्य में अधिकांश समाज न केवल अनेक देवताओं के अस्तित्व को मानते थे बल्कि अनेक देवताओं की आराधना भी करते थे। उस समय के रोमी साम्राज्य के अधिकांश लोगों के लिए राजकीय धर्म के प्रमुख देवताओं जैसे जेयूस और अन्य स्थानीय एवं घरेलू देवताओं की आराधना करना सामान्य बात थी। अत: यद्यपि मसीह की मांग थी कि विश्वासी केवल उसी की आराधना करें, परन्तु वहां अत्याधिक सामाजिक दबाव था जो आरंभिक मसीहियों को अन्य देवताओं की आराधना करने के लिए भी विवश कर रहा था।

185

वास्तव में, जब पहली सदी में रोमी साम्राज्य ने मसीहियों को सताना शुरु किया, यह मुख्यत: इसीलिए हुआ कि मसीहियों ने राजकीय धर्म के देवताओं को मानने और उनकी आराधना करने से इनकार कर दिया था। तब यह तर्क दिया गया था कि मसीहियों ने उन देवताओं की आराधना न करके उन्हें क्रोधित कर दिया है, और कि वे देवता पूरे रोमी समाज को दण्ड देंगे यदि मसीहियों से इसका लेखा नहीं लिया गया। रोमियों ने यह मांग नहीं की थी कि मसीही मसीह की आराधना करना बंद कर दें, परन्तु यही कि वे रोमी देवताओं की आराधना भी करें।

186

पहली सदी के रोमी दृष्टिकोण में कोई भी बिना किसी विरोधाभास की भावना के अनेक देवताओं की आराधना कर सकता था। परन्तु मसीह केवल अपनी ही आराधना को चाहता है। यदि हम मसीह की आराधना करते हैं तो हम किसी और की आराधना नहीं कर सकते। इसीलिए पौलुस ने बल दिया कि कुलुस्से के विश्वासी अपने विश्वास में स्थिर रहें। जैसा कि उसने कुलुस्सियों 1:21-23 में लिखा :

187

(परमेश्वर) ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया... ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्रा और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो। (कुलुस्सियों 1:21-23)

188

यदि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहते तो हम इस बात को साबित कर देते हैं कि परमेश्वर से हमारा सच्चा मेलमिलाप नहीं हुआ है। और यदि परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप नहीं हुआ है तो फिर उस आशा में हमारी कोई भागीदारी नहीं है जो सुसमाचार में पाई जाती है। सरल भाषा में कहें तो, यदि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहते तो हम उद्धार प्राप्त नहीं करते। मसीह के प्रति वफादारी सबसे महत्वपूर्ण है।

189

दुर्भाग्यवश, हमारा आधुनिक संसार हमारे समक्ष आराधना के लिए अलग-अलग देवताओं को प्रस्तुत करने के द्वारा मसीह के प्रति हमारी वफादारी को निरन्तर चुनौती देता है। बहुईश्वरवाद अनेक पूर्वी धर्मों में पाया जाता है, जैसे ताओ धर्म, चीन के तीन शास्त्रीय धर्मों में से एक; हिन्दू धर्म, भारत का प्रमुख धर्म; और शिन्तो, जापान का प्रमुख धर्म। और पश्चिमी जगत में नवीन युग की विचारधाराओं ने पूर्वी धर्मों के अनेक पहलुओं को अपना लिया था। इससे बढ़कर, मोरमोनवाद सिखाता है कि मोरमोन भविष्य में बनने वाले देवता हैं। फिर अफ्रीका और एशिया के लोक एवं आदिवासी धर्मों से लेकर हाँलीवुड, कैलीफोर्निया के विज्ञानवाद तक अनेक छोटे-छोटे बहुईश्वरीय धर्म भी हैं। यह सूची बढ़ती जा सकती है।

190

परन्तु आधुनिक मसीही अतिरिक्त समस्याओं का सामना करते हैं। उदाहरण के तौर पर आज के कुछ प्रशासन और समाज मसीहियों को सताते हैं यदि वे केवल मसीह के प्रति वफादार रहते हैं। इसीलिए चीन में अनेक कलीसियाएं भूमिगत ही हैं। और इस्लामी देशों में मसीहियों के विरुद्ध सताव का परिणाम प्राय: दासत्व और मृत्यु में होता है। परन्तु ये सताव जितने भी भयानक हों, और वे हमारे प्रभु को ठुकराने का हम पर कितना भी दबाव डालें, हमें मृत्यु तक मसीह के प्रति वफादार रहना आवश्यक है यदि हम परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करना चाहते हैं।

191

अन्य आधुनिक समाजों में मसीहियों पर नास्तिकवाद के द्वारा भी दबाव डाला जाता है ताकि वे परमेश्वर और मसीह में अपने संपूर्ण विश्वास को त्याग दें। मसीहियत का प्राय: उन आदिकालीन और सभ्यतारहित धारणाओं के समूह के रूप में मानकर उपहास किया जाता है जो विज्ञान के परीक्षण के समक्ष खड़ी नहीं रह सकतीं। अनेक विश्वासी जिन्होंने धर्मविज्ञान और विज्ञान का अध्ययन पर्याप्त रूप से नहीं किया हो वे इन चुनौतियों का उत्तर नहीं दे सकते और उनका विश्वास हिल जाता है।

192

दूसरे विषयों में, आधुनिक समाज का दार्शनिक सापेक्षवाद धार्मिक उदारता पर काफी बल देता है। परिणामस्वरूप, सत्य और उद्धार के विशिष्ट दावों की निन्दा की जाती है। पौलुस ने सिखाया कि मसीह के प्रति वफादारी ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। परन्तु जब आधुनिक मसीही इस विचार को दर्शाते हैं, तो हम पर प्राय: घमण्डी और असहनशील होने का आरोप लगाया जाता है। और फिर समाज द्वारा हम पर दबाव बनाया जाता है कि हम अनन्त आशीषों को पाने के अन्य मार्गों को भी मानें।

193

परन्तु सभी दबाव कलीसिया के बाहर से ही नहीं आते। उदाहरण के तौर पर, कुछ उदारवादी प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में बुद्धि या सोफिया की स्तुति भी की जाती है जिसे देवी के रूप में मानवीकृत किया जाता है। अन्य उदारवादी प्रोटेस्टेंट कलीसियाएं उनके समुदायों के दार्शनिक सापेक्षवाद का समर्थन करती हैं और सिखाती हैं कि अनेक या सभी धर्म उद्धार पाने के वैध मार्ग हैं- चाहे वे मसीह का इनकार कर दें तो भी।

194

सच्चाई यह है कि चाहे हम जहां भी रहें, यह संभव है कि हम मसीह के प्रति निष्ठाहीन होने का दबाव महसूस करते हैं। ये दबाव चाहे दूसरे धर्मों की वैधता को स्वीकार करने का हो या बाइबल के परमेश्वर का इनकार करने का दबाव हो। ये दबाव प्रशासन, हमारे विद्यालयों, हमारे पड़ोसियों और मित्रों, हमारे परिवारों या फिर हमारी कलीसियाओं के अगुवों से भी आ सकता है।

195

परन्तु यदि हमें पौलुस की शिक्षाओं के प्रति सच्चे बने रहना है तो हमें इन झूठे विचारों से अलग रहकर केवल मसीह को स्वीकार करना है। केवल मसीह ही आराधना के योग्य है, और केवल वही सच्चा उद्धार और आत्मिक आशीषें प्रदान करता है। हमें केवल मसीह के साथ अपनी वफादारी में स्थिर बने रहना आवश्यक है।

196

आत्मिक केन्द्र

अब जब हमने केवल मसीह के साथ वफादार रहने के महत्व को देख लिया है, तो हमें आधुनिक प्रयोग के हमारे दूसरे प्रकार की ओर मुड़ना चाहिए- हमारे जीवन में प्रतिदिन आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने का महत्व। यद्यपि पृथ्वी के विषयों पर ध्यान देने का कुछ महत्व है, परन्तु जब हम आत्मिक दृष्टिकोण से हमारे जीवन को चलाते हैं तो हमें काफी लाभ होता है।

197

जब हम मसीह में विश्वास करते हैं तो एक चमत्कारी कार्य होता है- हमारी आत्माएं हमारे भीतर नई हो जाती हैं। विश्वास में आने से पहले हम हमारे भीतर मरे हुए थे, और परमेश्वर के प्रति सकारात्मक प्रत्युत्तर देने में अयोग्य थे। हम परमेश्वर के शत्रु केवल इसलिए नहीं हैं कि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है और उसके दण्ड के योग्य हैं, बल्कि इसलिए भी कि हम उससे घृणा करते हैं और उसके प्रति समर्पित नहीं होते।

198

परन्तु परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमें अपने शत्रु बने रहने नहीं देता। इसलिए वह हमारी आत्माओं को नया करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजता है ताकि हम भीतर से पुनस्र्थापित हो जाएं, और हमारे पापों से पश्चाताप करके हमारे प्रभु के प्रति समर्पित हो जाएं। इसके साथ-साथ परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर वास करता है, हमें मसीह के साथ जोड़ता है और मसीह के साथ हमारी भावी आशीषों का आश्वासन देता है।

199

 हमारा उद्धार हमारे सांसारिक प्रयासों पर निर्भर नहीं करता, परन्तु हमारी पुनस्र्थापित आत्माओं और मसीह के साथ हमारे संयोजन की आत्मिक वास्तविकताओं पर निर्भर करता है। और यही कारण था कि पौलुस ने कुलुस्सियों को पृथ्वी के विषयों पर कम और आत्मिक विषयों पर अधिक बल देने के लिए उत्साहित किया।

200

जो मसीह पर विश्वास नहीं करते धर्मविज्ञानी उनका वर्णन नया जन्म न पाए हुओं के रूप में करते हैं। इसके विपरीत, नया जन्म पाना उन लोगों के लिए लागू किया जाता है जो मसीह पर विश्वास करते हैं। ये शब्द प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा की अवस्था को दर्शाते हैं। नया जन्म न पाने का अर्थ है आत्मिक रूप से मृत, और नया जन्म पाने का अर्थ है आत्मिक रूप से जीवित होना।

201

जिनको नया जन्म प्राप्त नहीं होता वे पाप के कारण परमेश्वर के दण्ड के अधीन होते हैं। और उनके पास कोई नैतिक योग्यता नहीं होती, अर्थात् वे लोग उन कार्यों को नहीं कर सकते जिन्हें परमेश्वर नैतिक रूप से शुद्ध मानता है। इससे बढ़कर, उनमें कोई नैतिक अभिलाषा नहीं होती, अर्थात, वे उन कार्यों को करना ही नहीं चाहते जिन्हें परमेश्वर नैतिक रूप से शुद्ध मानता है। सारांश में, नया जन्म न पाए हुए लोग उद्धार पाए हुए नहीं होते, वे अपने आप को उद्धार नहीं दिलवा सकते और परमेश्वर के द्वारा उद्धार पाना भी नहीं चाहते।

202

दूसरी ओर जो नया जन्म पाए हुए हैं वे क्षमा प्राप्त करते हैं क्योंकि वे मसीह के साथ जुड़े हुए हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार उनके पापों के लिए मरा। इससे बढ़कर, उनकी नई आत्माओं में नैतिक योग्यता पाई जाती है जिससे वे परमेश्वर की आज्ञा मानने और नैतिक अभिलाषाएं रखने के योग्य हो जाते हैं और उनमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा भी पैदा हो जाती है।

203

जब हम मसीह पर विश्वास करते हैं तो हमारे भीतर उत्पन्न हुए आत्मिक बदलाव के महत्व को बढ़ाचढ़ा कर नहीं बताया जा सकता। नया जन्म हमें नए लोग बना देता है। हम केवल क्षमा ही प्राप्त नहीं करते हैं; हम आत्मिक रूप से भी बदल जाते हैं। नया जन्म वह आत्मिक बदलाव है जिसका वर्णन पौलुस ने कुलुस्सियों 2:13 में किया, जहां उसने लिखा :

204

और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसे साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया। (कुलुस्सियों 2:13)

205

पहले हम हमारे पापों में मृत थे, अर्थात् हम परमेश्वर के दण्ड के भागी थे। परन्तु तब परमेश्वर ने हमें जीवित किया और हमारे पापों को क्षमा किया। हम हमारे पापी स्वभाव में भी मरे हुए थे, अर्थात् हमारे स्वभाव बुरे थे और न ही कोई नैतिक योग्यता या चाहत थी। परन्तु फिर परमेश्वर ने हमें जीवित किया। फलस्वरूप, अब हम में भलाई की चाहत रखने और भलाई करने की योग्यता है।

206

हमारी पुरानी, नया जन्म न पाई हुई आत्माओं में कोई नैतिक योग्यता या चाहत नहीं थी। परन्तु हमारी नई आत्माओं में नैतिक योग्यता और चाहत दोनों हैं। नया जन्म पाने और राजा मसीह से जुड़ने से पूर्व जब हम आत्मिक रूप से मृत थे, तो आत्मिक बातों या “स्वर्गीय बातों” पर चाहकर भी ध्यान लगाना हमारे लिए व्यर्थ होता। परन्तु अब जब हमने नया जन्म प्राप्त कर लिया है, तो हमारे लिए सबसे उचित बात यह है कि हम एक नई दिशा में हमारे जीवनों को केन्द्रित करें। हमारी आत्माओं को नया कर दिया गया है, अब हम आत्मिक लोग हैं। और आत्मिक लोगों के रूप में हमारे लिए सबसे तार्किक बात, और सबसे स्वाभाविक बात, और सबसे लाभदायक बात यह है कि हम आत्मिक जीवनों पर केन्द्रित रहें। और पौलुस ने कुलुस्सियों 3:1-2 में इस संदेश को देना जारी रखा :

207

सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। (कुलुस्सियों 3:1-2)

208

क्योंकि हम मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाए गए हैं, तो हमें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जो बातें स्वर्ग से संबंधित हैं। अब हम ब्राह्मांड की संरचना के सच्चे अधिकार से अवगत हैं; हम जानते हैं कि संसार किस प्रकार चलता है और कौनसी बातें सच्ची आशीषें प्रदान करती हैं। और इस ज्ञान के द्वारा हमारे जीवन जीने का तरीका बदल जाना चाहिए।

209

अब इतिहास के कुछ बिंदुओं पर मसीहियों ने त्रुटिपूर्वक सोचा है कि जब पौलुस ने पृथ्वी की बातों पर नहीं परन्तु स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाने के लिए कहा तो उसका अर्थ था कि हमें बिना किसी भटकाव के स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाने के लिए सामान्य मानवीय जीवन को त्याग देना चाहिए। मध्ययुगीन सन्यासी (मोंक) इस प्रकार की विचारधारा का सही उदाहरण हैं। कुछ ने समाज से विमुख होकर साधुओं के रूप में जीवन व्यतीत किया। कुछ लम्बे समय के लिए गुफाओं या खम्भों के ऊपर बैठे। दूसरों ने स्वयं को शारीरिक हानि पहुंचाई। उन्होंने सच्चे मन से माना कि आत्मिक रूप से बढ़ने का सर्वोत्तम तरीका सामान्य, अनात्मिक संसार के प्रभाव से बचना है। परन्तु वे गलत थे। वास्तव में, कुछ रूपों में, उन्होंने वही गलतियां कीं जो कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने की थीं।

210

जानेमाने शिक्षक बूकर टी. वाशिंगटन, उस विद्यालय के संस्थापक जो टुस्केगी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है, को इस अमेरिकी कहावत का लेखक माना जाता है :

211

कोई व्यक्ति तब तक किसी व्यक्ति को खाई में नीचे पकड़ नहीं सकता जब तक वह उसके साथ स्वयं खाई में उसके साथ न हो।

212

कई रूपों में, वाशिंगटन ने मानवीय संबंधों पर वही लागू किया जो पौलुस ने मसीहियो के आंतरिक जीवन के विषय में सिखाया था। अर्थात्, यदि हम हमारी सभी शक्तियों को हमारी पापमय अभिलाषाओं को दबाने की ओर लगाते हैं, तो भी हम हमारी पापमय अभिलाषाओं पर ही ध्यान लगा रहे हैं। हां, पापों को दबाना अच्छी बात है, एक अच्छा कार्य भी है। और पौलुस ने शरीर के पापों को मार डालने के लिए विश्वासियों को उत्साहित किया था। परन्तु पौलुस का बिंदू केवल यही नहीं था कि हम संसार के विषयों के प्रति एक नए दृष्टिकोण को अपना लें, बल्कि यह भी कि हम सांसारिक बातों की ओर से ध्यान हटाकर आत्मिक बातों की ओर लगाएं। परन्तु “आत्मिक” या “स्वर्गीय” विषय जो पौलुस के मन में थे वे संसार के साथ हमारी भागीदारी की मांग करते हैं। कुलुस्सियों 3:12-16 में उसके शब्दों को सुनें :

213

करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो... एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो। मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो, मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो। (कुलुस्सियों 3:12-16)

214

स्वर्ग पर केन्द्रित होने का अर्थ है उस पर केन्द्रित होना जो स्वर्ग में चढ़ गया है, अर्थात् मसीह, ताकि जब हम पृथ्वी पर ही हैं तो उसके समान हो जाएं।

215

और ध्यान दें, किस प्रकार के विषयों को पौलुस “स्वर्गीय” या “आत्मिक” कहता है। उनमें से अधिकांश पारस्परिक सदगुण हैं, वे सदगुण जो मुख्यत: या फिर केवल दूसरों के प्रति ही व्यक्त किए जा सकते हैं, जैसे समुदाय के संदर्भ में करूणा, दया, नमृता, कोमलता, धैर्य, क्षमा, प्रेम, और शांति। इन सदगुणों को वर्तमान संसार में सक्रिय जीवन जीने के बिना क्रियान्वित नहीं किया जा सकता।

216

और वास्तव में, कुलुस्सियों 3:16-4:6 में पौलुस ने उन कई तरीकों को स्पष्ट किया जिनके द्वारा विश्वासी अपने अनेक सांसारिक संबंधों के संदर्भ में भी इन सदगुणों को लागू कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, उसने लिखा कि विश्वासियों को एकसाथ भजन, गीत और आत्मिक गान गाकर एक-दूसरे को समझाना चाहिए। उसने पत्नियों को निर्देश दिया कि वे अपने पतियों के प्रति समर्पित रहें, और पतियों को कि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें। उसने बच्चों को निर्देश दिया कि वे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें, और माता-पिता को कि वे अपने बच्चों का उत्साहवर्द्धन करें। उसने दासों को आज्ञा दी कि वे आज्ञाकारी एवं उपयोगी बनें, और स्वामियों को कि वे दासों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा यीशु, जो सबका स्वामी है, अपनी कलीसिया से व्यवहार करता है। उसने अपने लिए प्रार्थना की मांग की कि परमेश्वर उसे सामर्थ प्रदान करे जब वह सुसमाचार का प्रचार करता है। और उसने कुलुस्सियों को भी निष्ठावान और बुद्धिमान बने रहने का निर्देश दिया जब उन्हें स्वयं सुसमाचार प्रचार करने के अवसर मिलते हैं। ये सभी निर्देश “आत्मिक” या “स्वर्गीय” विषयों से संबंधित हैं। परन्तु फिर भी इनका क्रियान्वयन वर्तमान संसार में सक्रिय सहभागिता के द्वारा ही किया जा सकता है।

217

पौलुस के लिए स्वर्गीय या आत्मिक रूप से केन्द्रित होने का अर्थ इस बात को दर्शाना है कि इस समय स्वर्ग कितना अद्भुत है, और वर्तमान संसार को स्वर्ग के समान बनाने के मार्गों को ढूंढ़ना है। यह हमारे नए आत्मिक स्वभावों और उन भले कार्यों पर ध्यान लगाना है जो उनके अनुसार उपयुक्त हों। यह दूसरों से प्रेम करना, दूसरों को क्षमा करना, दयावान, कोमल और नम्र बनना है। यह दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना है जैसा यीशु उनसे व्यवहार करता है। सारांश में, आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने के लिए हमें इसी समय, इसी स्थान अर्थात् इसी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के निर्माण पर ध्यान देना है।

218

उपसंहार

इस अध्याय में हमने प्रेरित पौलुस और कुलुस्से के विश्वासियों के साथ उसके संबंध को ध्यान से देखा है। हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि एवं उसकी संरचना और विषय-वस्तु की जांच की है। अंत में, हमने कुलुस्सियों द्वारा पौलुस से प्राप्त शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा की है।

219

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री में आज के संदर्भ में हमारे लिए अनेक महत्वपूर्ण बातें हैं। यह हमें मसीह की सर्वोच्चता के बारे में और उसके प्रेरितों एवं उनकी शिक्षाओं के बारे में भी बताती है जिनको हमें उच्च सम्मान प्रदान करना चाहिए। यह परमेश्वर के राज्य में हमारी भूमिका, और जिस महान् उद्धार का हम आनन्द उठाते हैं, को स्पष्ट करती है। और यह हमें स्वर्ग में भागीदार लोगों के रूप में आत्मिक स्वभावों के साथ जीने और हमारी स्वर्गीय नीतियों को पृथ्वी पर लागू करने के लिए कार्य करने हेतु उत्साहित करती है। जब हम हमारे मसीही जीवनों में आगे बढ़ते हैं तो इस पत्री में पौलुस द्वारा सिखाई गई बातों को याद रखना हमारे विश्वास को बनाए रखने, और परमेश्वर के राज्य के उपयोगी एवं धन्य सदस्यों के रूप में जीने में सहायता करेगा। अत: यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि पौलुस की कारावास की पत्रियां निरंन्तर नैतिक जीवन पर बल देती हैं। एक ओर यह तथ्य कि मसीह राजा है, उसकी आज्ञा मानने के लिए हमें प्रेरित करता है। दूसरी ओर यह तथ्य कि हम मसीह के साथ जुड़े हुए हैं, हमें प्रेरित करता है कि हम उसके चरित्र के अनुसार जीवन जीएं। आइए पहले हम नैतिक रूप से जीवन जीने, जो मसीह के राजत्व से निकलता है, के दायित्व पर ध्यान दें।

220